कार्यालय रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (मध्य कमान) करियप्पा मार्ग, लखनऊ छावनी-226002
Office of the Principal Controller of Defence Accounts (CC)
Cariappa Road, Lucknow Cantt.-226002

राजभाषा गतिविधि

निबंध का विषय: *'बिन पानी सब सून'*

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (24 मई 2016) : परिणाम

पूर्णांक : 100

अनुक्रमांक	प्रतिभागी का नाम	प्रथम मूल्यांकनकर्ता द्वारा प्रदत्त अंक	द्वितीय मूल्यांकनकर्ता द्वारा प्रदत्त अंक	औसत	पुरस्कार	अनुभाग
1	श्री सुधाकर चौरसिया	A	A	A		
2	श्री कपिल वर्मा	45	48	46.5		
3	श्री अजीत कुमार	44	55	49.5	सान्त्वना	सिंगल विंडो
4	श्री अमित कुमार	A	A	A		
5	श्री वीरेंद्र प्रताप	A	A	A		
6	श्री सुरेश कुमार	40	46	43		
7	श्री अर्जुन सिंह	51	63	57	प्रथम	निधि
8	श्री अजय सिंह	45	53	49		
9	श्री आलोक कुमार	40	65	52.5	सान्त्वना	आ.ले.प.
10	श्री राघवेंद्र सिंह	20	45	32.5		
11	श्री स्वप्निल कुमार सिंह	A	A	A		
12	श्री विशेष कु. श्रीवास्तव	A	A	A		
13	श्री अंकित शर्मा	A	A	A		
14	श्री विश्व मोहन झा	25	57	41		
15	श्री आशुतोष शुक्ला	A	A	A		
16	श्री विमल कुमार	44	64	54	तृतीय	से. एवं प.
17	श्री विशन चन्द्र गुप्ता	A	A	A		
18	कुमारी संध्या	A	A	A		
19	श्री विभुवन नारायण सिंह	45	67	56	द्वितीय	परिवहन
20	श्री मुकेश कुमार	A	A	A		
21	श्री अनिल कुमार कश्यप	A	A	A		
22	श्री नरेंद्र सिंह	A	A	A		
23	श्री अवधेश कुमार	A	A	A		
24	श्री चंदन कुमार चौरसिया	A	A	A		
25	श्री अतुल प्रकाश श्रीवास्तव	35	54	44.5		
26	श्री प्रवीण दुबे	40	49	44.5		
27	श्री अभय कुमार अभिजीत	A	A	A		
28	श्री राजीव कुमार	A	A	A		
29	श्री अवधेश कुमार यादव	50	52	51	सांत्वना	पोस्ट ऑडिट
30	श्री जन्मेजय यादव	48	57	52.5	सांत्वना	संवितरण
31	श्री अमित मिश्रा	A	A	A		

मूल्यांकनकर्ताओं के नाम: 1. श्री चन्द्र प्रकाश , व.लेखाधिकारी 2. श्री राजीव कुमार श्रीवास्तव, व. लेखाधिकारी

अनुक्रमांक - 07

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून
उक्त पंक्ति पानी की महत्ता को दर्शाती है। हम इतिहास को देखें तो पता चलता है कि महान मानव सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है अर्थात जहाँ जल की प्रचुरता थी। जिन-जिन इलाकों में पानी की समस्या हुयी वे क्षेत्र विकास की दौड़ में पिछड़ते चले गये। विश्व के अधिकांश बड़े शहर नदियों के किनारे ही बसे हैं। परन्तु पिछले कुछ वर्षों से पर्यावरणीय और मानवीय कारणों से पानी की समस्या एक गम्भीर समस्या बनी हुयी है।

पानी की समस्या के प्रकार :-

(i) कृषि में पानी की समस्या :- आज भारतवर्ष के कई राज्य पानी की समस्या से ग्रसित हैं जिसका खामियाजा कृषि क्षेत्र को भुगतना पड़ रहा है। बुंदेलखंड, विदर्भ, थार, आंध्रप्रदेश कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पानी की कमी के कारण कृषि प्रभावित हो रही है।

(ii) मौसमी पानी की समस्या :- पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन के कारण वर्षा के मौसम में भी सामान्य वर्षा नहीं हुयी है जो प्रमुख समस्या है।

(iii) मानव समाज में पानी की समस्या :- आज पानी की कमी के कारण मानव समाज की मूलभूत आवश्यकतायें भी पूरी नहीं हो पा रही हैं।

पानी के समस्या के कारण :- पानी की समस्या के दो मूलभूत कारण हैं-
(i) प्राकृतिक कारण (ii) मानव जनित कारण

प्राकृतिक कारण :- प्राकृतिक कारणों से हमारा तात्पर्य जलवायु, भौगोलिक कारणों से है जैसे पश्चिमी घाट के पीछे का क्षेत्र वृष्टि

छाया क्षेत्र है जहाँ वर्षा नहीं हो सकती इसी प्रकार थार का मरुस्थल, बुंदेलखण्ड आदि में वर्षा न होने के कारण भौगोलिक है। अर्थात भौगोलिक, प्राकृतिक कारणों से पानी की समस्या है।

मानव जनित कारण :- पानी की समस्या के मानव जनित कारण लोगों में जागरूकता का अभाव है अर्थात जिन क्षेत्रों में पानी आसानी से उपलब्ध है वहाँ पानी का कुप्रबंधन के कारण यह एक समस्या के रूप में उभरा है। मानव द्वारा जल स्रोतों का अतिशोषण, अतिदोहन, अविवेकी दोहन जल समस्या का प्रमुख कारण है। जल स्रोतों को प्रदूषित करना भी इस समस्या का एक कारण है।

जल पानी सब सूत्र अर्थात जल की कमी के प्रभाव :-

(i) मानव पर प्रभाव
(ii) आर्थिक प्रभाव
(iii) पर्यावरणीय प्रभाव
(iv) सामाजिक प्रभाव
(v) अन्य प्रभाव

मानव पर प्रभाव :- जल की कमी मानव जीवन पर गंभीर प्रभाव डालती है। हमारा शरीर का अधिकांश भाग पानी का ही है। पानी की कमी के कारण निर्जलीकरण, हाइपर थर्मिया, बेहोशी, चक्कर आना, शारीरिक रूप से कमजोर होना, कुपोषण आदि समस्या उत्पन्न होती है।

आर्थिक प्रभाव :- जल संकट के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है अर्थात बाजार में कच्चे माल की कमी होती है जिससे उत्पादन विनिर्माण प्रभावित होता है। अर्थव्यवस्था मंदी की ओर बढ़ती है जिससे बेरोजगारी, महंगाई की समस्या जन्म लेती है। सकल घरेलू उत्पाद

(जीडीपी) प्रभावित होती है। व अंतरराष्ट्रीय विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव :-

जल की कमी से मरुस्थलीकरण को बढ़ावा मिलता है, वनों का ह्रास होता है, वायु अपरदन होता है, जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, धूल भरी आंधियाँ चलती हैं, जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। फसल चक्र प्रभावित होता है, तापमान बढ़ता है इत्यादि।

सामाजिक प्रभाव :-

जल की कमी समाज पर भी नकारात्मक असर डालती है। जल की कमी वाले क्षेत्र विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं अर्थात ऐसे क्षेत्रों में पिछड़ापन एक समस्या के रूप में जन्म लेता है। मानव पूंजी जल की आपूर्ति में ही समाप्त हो जाती है वो समाज की प्रगति में अपना रचनात्मक योगदान देने से वंचित रह जाती है।

अभी हाल के सामाजिक शोधों द्वारा जल की समस्या के कारण महाराष्ट्र व आसपास के क्षेत्र में दो नई सामाजिक समस्याओं बाल विवाह व बहु पत्नी विवाह ने जन्म लिया है महाराष्ट्र के गन्ना मिलों में पुरुष को नौकरी व अधिक तनख्वाह के कारण बाल विवाह को बढ़ावा मिला है चीनी मिलों में पुरुष को ही नौकरी के कारण बाल विवाह शुरू हो। गाँव इसी प्रकार पानी की कमी अर्थात आपूर्ति में अधिक श्रमबल के लिए पत्नी सस्ता, सुलभ श्रमबल होने के कारण वहाँ बहुपत्नी विवाह में बढ़ोतरी देखी गई है कई पत्नियाँ पानी को दूर से आराम से ला सकेंगी।

अन्य प्रभाव :- अन्य प्रभाव में

द्वारा आत्महत्या करना है। पानी की कमी के कारण फसलों का चौपट होना जिससे किसानों का बर्बादी के कगार पर पहुंच जाना के कारण वह आत्महत्या को विवश है। जल की कमी के कारण बच्चों का समुचित शारीरिक मानसिक बौद्धिक विकास नहीं हो पाता जिससे वह इस प्रतिस्पर्धी युग में पिछड़ जाते हैं व गरीबी के दुष्चक्र में फंस जाते हैं।

पानी की समस्या को दूर करने के लिये सुझाव :-

पानी की महत्ता को समझते हुये इस समस्या को दूर करने के लिये निम्न उपाय किये जा सकते हैं -

(i) जल स्रोतों का मानचित्रण, उपग्रह द्वारा उन पर निगरानी।

(ii) जल संकट के लिये एक समिति का गठन किया जाये जो सभी पहलुओं का अध्ययन कर विशिष्ट सुझाव दे।

(iii) लोगों को जागरूक किया जाये।

(iv) रेन वाटर हार्वेस्टिंग को बाध्यकारी किया जाये।

(v) जल बर्बादी के सटीक कारणों का अध्ययन किया जाये।

(vi) फसलों का चुनाव उनकी जल खपत क्षमता के आधार पर किया जाये।

(vii) सिंचाई के लिये ड्रिप इरीगेशन जैसी वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाये।

(viii) नदी जोड़ो परियोजना जैसी अन्य योजनायें लायी जायें व इनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाये।

(ix) जल प्रबंधन माडल का प्रयोग किया जाये।

(x) जल स्रोतों का विवेकपूर्ण दोहन किया जाये व वर्षा जल व अन्य प्राकृतिक

उपर्युक्त तथ्यों से पता चलता है कि जल से जुड़ी समस्या प्राकृतिक होने के साथ-साथ उसके उचित प्रबंध न होने की है क्योंकि जल स्रोत सीमित है हमें इसके इनका विवेकपूर्ण, दोहन करना चाहिये। लोगो को जागरूक कर जल प्रबंधन किया जा सकता है। जल मानव जीवन के लिए अपरिहार्य है इसलिये तो कहा जाता है 'जल है तो कल है। जल ही जीवन है। अर्थात मानव सभ्यता को बचाने के लिये जलस्रोतों का उचित प्रबंधन आवश्यक है और यह प्रत्येक मानव का कर्तव्य है।

— !O! —

विषय : बिन पानी सब सून

"क्षिति जल पावक गगन समीरा,
पंचभूत से बना शरीरा ॥"

हमारे प्राचीन मनीषियों ने मानव जीवन के लिये जिन पाँच मूलभूत तत्वों की कल्पना की थी, उनमें जल अर्थात पानी सबसे महत्व पूर्ण तत्व है। आज के आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि हमारे शरीर का 80% भाग जल से निर्मित है। अर्थात जल के बिना जीवन की कल्पना को असंभव है।

जीवन की उत्पत्ति को लेकर भी कई वैज्ञानिक सिद्धांत प्रतिपादित किये लेकिन उनमें सबसे मान्य सिद्धांत के अनुसार, जीवन की शुरुआत जल से ही हुई। जब हजारों वर्ष पूर्व जल में मौजूद H_2 (हाइड्रोजन) ने वातावरण में मौजूद N_2 तथा CO_2 से क्रिया करके अमीनो आम्ल एवं न्यूक्लिक आम्ल का निर्माण किया जो आगे चलकर सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति में सहायक हुआ। अर्थात जल के बिना इस पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति ही सम्भव नहीं थी।

मानव जीवन के विकास के बाद पृथ्वी पर मानवीय सभ्यताओं का उद्भव हुआ। प्राचीन काल की सभी महत्वपूर्ण सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास पानी के समीप अर्थात नदियों के किनारे ही हुआ चाहे सिंधु एवं सरस्वती नदी की घाटी में सिंधु घाटी सभ्यता हो या फिर नील नदी घाटी को मेसोपोटामिया की संस्कृति। इसी के साथ यदि हम इन सभ्यताओं के पतन या विनाश पर गौर करें तो हम पाते हैं कि

इन नदी घाटियों में जल अभाव एवं कुप्रबंधन इन संस्कृतियों के पतन का कारण बना। खासकर सिंधु घाटी की सभ्यता के पतन में जल स्रोतों का अभाव एक महत्वपूर्ण कारण माना जाता है।

फिर भी, मानव ने विकास की अंधी दौड़ में, इतिहास से सीख न लेते हुये, अपने प्राकृतिक संसाधनों के विनाश में जरा भी संकोच नहीं किया। जिसका दुष्परिणाम आज दुनिया के सामने ग्लोबल वार्मिंग एवं जल की कमी के रूप में सामने आ रहा है। वनों के कटान के कारण जहाँ एक ओर वर्षा अनियमित हो रही है साथ ही बढ़ते तापमान के कारण मौजूदा जलस्रोत सूखते जा रहे है। साथ ही धरती में पानी का जलस्तर लगातार गिरता जा रहा है।

21वीं सदी के शुरुआत में ही पानी की समस्या ने विकराल रूप लेना शुरू कर दिया है। आज हमारे देश का लगभग 20% प्रतिशत क्षेत्रफल पानी की समस्या से जूझ रहा है। जबकि लगभग देश के भूभाग के एक तिहाई क्षेत्र जिसमें महाराष्ट्र, बुंदेलखंड एवं राजस्थान के कुछ क्षेत्र पानी की गंभीर ~~संकट समस्या~~ संकट से ग्रस्त है। स्थिति यहाँ तक ~~आई~~ पहुँच गई है कि इन क्षेत्रों में लोगों की प्यास बुझाने के लिये ट्रेनों से पानी पहुँचाया जा रहा है। यहाँ के लोग दूसरे क्षेत्रों में पलायन करने को मजबूर है। क्योंकि बिना पानी के इनके लिये जीवन असंभव हो गया है।

पानी की यह समस्या केवल हमारे देश की राष्ट्रीय समस्या नहीं है बल्कि आज इसने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ले लिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार दुनिया की लगभग 40% आबादी जल का संकट झेल रही है।

एशिया, अफ्रीका, महाद्वीप के देश हैं।

: राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थायें इस संकट के बारे में चेताती रहीं है लेकिन न तो राष्ट्रीय स्तर पर और न ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर इस संकट को लेकर हमारे नेतृत्व में गंभीरता दिखी। हमारे देश में पर्यावरण एवं जल संसाधन मंत्रालय समय समय पर निर्देश जारी करता है रहता है लेकिन उन पर पर कभी गंभीरता पूर्वक अनुपालन सुनिश्चित नहीं हुआ। इस बार के जल संकट को देखते हुये पहली बार कई राज्य जल बोर्डों ने अपने राज्यों में कुछ कठोर निर्देश जारी किये हैं जिसके तहत खेतों में 200 फीट से गहरी बोरिंग पर प्रतिबंध लगा दिया है। साथ ही सिंचाई एवं वर्षा जल संरक्षण के लिये भी निर्देश जारी किये गये निर्देशों के अनुपालन पर जोर दिया जा रहा है।

साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी नवंबर, 2015 में पेरिस में आयोजित COP-21 (कान्फ्रेंस ऑफ पार्टीस) के सम्मेलन में दुनिया के 175 देशों द्वारा ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने के लिये हुआ समझौता एक स्वागत योग्य कदम है। जिसके तहत भागीदार देशों ने ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिये अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की। भारत ने इस सम्मेलन, देश के लिये बहुत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया जिसके भारत 2022 तक अपने देश 1,60,000 मेगावॅट सौर ऊर्जा का उत्पादन कर ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभायेगा। साथ ही भारतीय प्रधान मंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी ने फ्रांस के राष्ट्रपति के साथ मिलकर "अन्तर्राष्ट्रीय सौर संगठन" (ISA) का गठन किया जिसका मुख्यालय भारत में होगा। जो दुनिया को सौर ऊर्जा के उत्पादन से संबंधित तकनीकी एवं आर्थिक मदद उपलब्ध करायेगा।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अब राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जल की समस्या के प्रति गंभीर हो रहा है। आज समय की माँग है कि इस संकट का सामना करने के लिये सरकारी प्रयासों के साथ-साथ सामुदायिक भागीदारी बढ़ाई जाये एवं जनमानस को इस संकट की गंभीरता को बताते हुये जनभागीदारी सुनिश्चित की जाये। इस क्षेत्र में भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह के प्रयासों से प्रेरणा लेनी चाहिये। जिन्होंने जनभागीदारी के माध्यम से महाराष्ट्र के कई सूखा ग्रस्त क्षेत्रों जलभंडारों को संरक्षित कर नई उम्मीद जगाई है। जिसके कारण आज पेश श्री राजेन्द्र सिंह को 'जलमानव' के नाम जाना है।

'पानी' जीवन का मूलभूत तत्व है अर्थात जब तक पृथ्वी पर पानी तभी तक पृथ्वी पर जीवन है। बिना पानी के हमारी सभी महान अवधारणायें जैसे-"सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे सन्तु निरामया"- आदि गौण हो जाती है। इसलिये आज मानव मात्र का सबसे बड़ा कर्तव्य होना चाहिये- 'जल का संरक्षण' क्योंकि "जल ही जीवन है" और बिन पानी सब सून।

विषय - बिन पानी सब सून

"पानी परमात्मा के द्वारा इस भूधरा पर उपस्थित सभी जीव जन्तुओ को प्रदान किया गया "प्रसाद" है जिसकी एक भी बूंद को प्रसाद समझकर बर्बाद होने से बचाना तथा उसका सदउपयोग करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है।" ऐसे कुछ अलग विचार हाल ही मे हमारे प्रधान मंत्री जी ने दिये जो पानी के महत्व को बताते है कि इसके बिना इस प्रथ्वी ही नही वरन सम्पूर्ण विश्व मे जीवन की कल्पना कर पाना संभव नही है। पानी सभी जीवधारियो के जीवन का अभिन्न तत्व है। जैसा कि वैदिक ग्रन्थो मे कहा गया है कि किसी भी जीवधारी की रचना पांच तत्वो से हुई है जिसमे एक तत्व पानी भी है। अर्थात यह कहा जा सकता है कि पानी के बिना तो जीवधारियो की उत्पत्ति ही संभव नही है और जब उत्पत्ति ही नही होगी तो जीवन जीना और जीवन जीने के दौरान आवश्यकताओ की बात ही नही होगी और इस तरह से हम यह समझ सकते है कि पानी हमारे जीवन को प्रारम्भ करने से लेकर अंत तक किस प्रकार महत्व पूर्ण है।

जैसा कि हमे ज्ञात है कि सम्पूर्ण प्रथ्वी का लगभग 71% जल तथा 29% स्थल भाग है जिसमे संपूर्ण जल का 98% भाग खारा है जिसे जीवन के दैनिक कार्यो मे प्रयोग नही कर सकते, तथा बचे हुऐ लगभग 2% मे लगभग 1% से ज्यादा पानी बर्फ के रूप मे पर्वतों की चोटियों पर हिमखण्डो के रूप मे तथा अंटार्कटिका महाद्वीप पर बर्फ के रूप मे उपस्थित है इसप्रकार बचा हुआ लगभग 1% से भी कम पानी जो पीने योग्य है वह नदियो, तालाबो, कुछ मीठे पानी की झीलो, तथा प्रथ्वी की भूपर्पटी के नीचे स्थित है जिसे हम हैंडपंप, नलकूप कुंआ, समरसेबिल इत्यादि तरीको से दैनिक जीवन मे उपयोग करते है जैसे - पीने के लिए खाना पकाने के लिए, किसानो द्वारा फसलो को सिंचित करने के लिए इत्यादि।

उपरोक्त विवरण को देखते हुऐ कह सकते है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त सीमित जल यदि जीवधारियो के द्वारा उनकी असीमित मानवीय इच्छाओ पर रोक लगाते हुऐ तथा बेहतर प्रबन्धन के तहत पानी का उपयोग नही किया जाऐगा तो आने वाले समय मे इसके भयानक परिणामो से बच पाना इतना आसान नही होगा।

अभी हाल ही मे विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमे कहा गया कि मनुष्यो तथा अन्य जीवो मे उत्पन्न हो रही स्वास्थ संबन्धी बीमारियो मे प्रदूषित पानी, खारा पानी, सल्फर युक्त, नाइट्रस आक्साइड, तथा अन्य हानिकारक रसायनो के द्वारा उत्पन्न हो रही है जो कि इनके जीवन को परोक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है जिससे बचने के लिए हमे पानी के प्रयोग तथा उसके रसायनो के दुष्प्रभावो से बचाना होगा।

वर्तमान मे मानव की महत्वाकांक्षी इच्छाओ ने मौलिक सुख-सुविधाओ के लिए प्राकृतिक संशाधनो का अन्धाधुन्ध दोहन करना अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है जैसे- हर एक क्षेत्र मे अत्याधिक रसायनो का प्रयोग करना जो कि फसलो द्वारा मिट्टी मे, धुआ, वायु प्रदूषण द्वारा, कल कारखानो के द्वारा आस-पास के क्षेत्रो मे फैल जाता है जो वर्षा के द्वारा जल मे मिलकर जल को हानिकारक रसायनो से युक्त कर देता है और यही जल जब पुनः प्रयोग मे लाते है तो जीवन खतरे मे पड़ जाता है अतः हमे इन सब हानिकारक रसायनो से पानी को बचाना है।

दूसरी तरफ मनुष्य प्रायः अपने घरो को साफ करने, हर रोज अपने मोटर वाहनो को साफ करने, घर के सामने सड़को को साफ करने इत्यादि अनावश्यक कार्यो मे जरुरत से कई गुना जादा पानी की बर्बादी करता है और यह सब करते वक्त समय वह यह भूल जाता है कि यह पानी आता कहा से है और इसके कितने सीमित भण्डार है और जब ये सीमित भण्डार समाप्त हो जायेगे तब वह क्या करेगा जो कि एक काली रात के समान होगा जिसमे कुछ भी दिखाई, सुनाई नही पडेगा। जबकि यह हम सब का एक नैतिक कर्तव्य है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त प्रसाद को कुशलता के साथ प्रयोग करे और जिससे आने वाली पीढी को सुरक्षित तथा प्राकृतिक संशाधनो के साथ जीवन जीने दे सके।

यदि हम पीने योग्य पानी के "वैश्विक वितरण" पर एक नजर डाले तो पाते है कि दुनिया के कई भू-भाग ऐसे है जहा पानी को पीने के लिए भी आसानी से उपलब्ध

जिसमे इराक, ईरान, साउदी अरब, टर्की, जर्डन इत्यादि देश स्थित है, अफ्रीका महाद्वीप मे - सहारा मरूस्थल, कालाहारी मरुस्थल इत्यादि, द० अमेरिका मे चिली का आटाकामा मरुस्थल, ब्राजीलियन पठार, एशिया मे गोबी का मरुस्थल मंगोलिया का पठारी तथा मरुस्थलीय प्रदेश, राजस्थान का रेगिस्तान, उ०प्र० तथा मध्य प्रदेश के मध्य स्थित बुन्देलखण्ड का क्षेत्र इत्यादि। ये दुनिया के कुछ ऐसे स्थान है जहा के मनुष्यो को पीने के लिए पानी उपलब्ध नही हो पाता, फसले को सींच नही पाते, कपडो को साफ नही करपाते मवेशियो को पानी उपलब्ध नही करापाते अर्थात कह सकते है कि यहा के निवासियो का जीवन पानी के बिना सूना है किसान आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाते है। मवेशी पानी के प्यास मे तड़प- तड़प कर मर जाते है। अतः हमे पानी के महत्व को समझना चाहिये। और इसका कुशलतम तथा सुव्यवस्थित ढंग से प्रयोग करना चाहिये! क्योकि पानी के अधिक या अंधाधुन्ध दोहन से जलस्तर गिरता जा रहा है।

महाराष्ट्र जैसे राज्य मे तो यह स्थिति है कि पानी के बवाल के लिए न्यायपालिका को आगे आना पड़ा क्योकि एक तरफ महाराष्ट्र के "लाट्र" जैसे क्षेत्र मे पीने के लिए पानी ट्रेन के द्वारा पहुचाया जा रहा है और वही दूसरी तरफ मनोरंजन के लिए IPL क्रिकेट के मैदानो मे लाखो लीटर पानी प्रतिदिन बहाया जा रहा है जो कि न्यायसंगत नही है। एक तरफ पानी के बिना लोगो का जीवन सूना हो रहा है दूसरी तरफ इसकी बर्बादी !

एक तरफ जहा पानी के वितरण मे जो असमानता है उसे सरकार, नदी जोडो परियोजना, अमृत परियोजना, नहर परियोजना आदि के द्वारा देश के प्रत्येक व्यक्ति स्थान तक जल को पहुचाने का प्रयास कर रही है, "वाटर हार्वेस्टिंग" को अपनाने, तालाबो को भरने तथा बनाने का प्रयास कर रही है वही कुछ इसे बर्बाद कर रहे है। हम सब लोग यह जानते हुऐ कि बिना पानी के जीवन शून्य या सून है फिर भी कुशलतम प्रयोग नही करते!

अतः अन्त मे कह सकते है कि प्रकृति द्वारा प्रदान जीवन रूपी पानी को सुरक्षित रखना हम सब का मौलिक कर्तव्य है जिसे निष्ठा के साथ निभाना चाहिऐ जिससे आगे आने वाली पीढ़ी अपने हिस्से का प्रकृति रूपी प्रसाद को प्राप्त कर सके!